ओम् शान्ति

सर्वश्रेष्ठ एवं सर्व महान धोबी–शिव बाबा

समय का पहिया जब वायुमण्डल के धरातल पर घूमता है तब हवा के साथ धूल कण एवं प्रकृति की मलीनता सभी चीजों को धूमिल कर जाती है और पुनः उसकी चमक बिखेरने के लिए हमें करने पड़ते हैं अनेक उपक्रम। पहले तो हर कर्म करने के लिए एक वर्ग निर्धारित था जिससे समाज में हर व्यक्ति की वैल्यु थी और हर व्यक्ति का समाज में सहयोग व लिंक था एक दूसरे के सहयोग के कारण आपसी प्रेम प्यार बहुत था। कोई हमें अनाज देता था, कोई सब्जी, कोई बाल काटता था, कोई कपड़े धोकर देता था, हम यह भी देख सकते थे कि जिसका जो कार्य था वह अपने काम को बड़े मनोयोग के साथ समय से करके देता था जिससे सब कार्य सहज व सही ढंग से हो जाते थे। दूसरा व्यक्ति वही काम कितना भी कोशिश से करता पर ठीक नहीं हो पाता था। ऐसे ही एक कार्य है **धोबी का कार्य**। पहले जमाने में लोग धोबी से कपड़े धुलवाते थे। धोबी लोग बहुत मेहनत से कपड़े धुलते थे। हमारे गंदे कपड़ों को धोबी लोग रेहू (एक प्रकार की सोडियम युक्त मिट्टी) में लपेट कर दो दिन रखकर फिर मसाला डालकर आग की भट्ठी पर चढ़ाते थे फिर नदीं या तालाब के पास ले जाकर दिसम्बर– जनवरी की कड़कती ठंड में भी वह पानी में खड़े होकर लकड़ी या पत्थर के पट्टे पर पीट–पीट कर वह कपड़े धोते थे और बदले में मिलता था उनको थोड़ा सा अनाज लेकिन सुखी दोनों लोग रहते थे। परन्तु समय बदला, मानसिकता बदलीं और बदल गयी सारी पुरानी गतिविधियाँ, कार्यप्रणाली। आज विज्ञान के युग में हर कार्य विज्ञान के माध्यम से होता है जिसमें समय की बचत और कार्य में सफाई भी रहती है। इसी श्रृंखला में आज कपड़े धुलाई में भी विज्ञान ने आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है। विज्ञान ने कपड़े धुलाई के लिए अच्छे से अच्छा सहज से सहज एक से बढ़कर एक साधन अर्थात मशीनें दे दी हैं जिसमें गंदे से गंदा कपड़ा भी कम से कम समय में व बिना कोई मेहनत के ही अच्छा धुल जाता है जिससे धोबियों की रोजी रोटी का सवाल उठ खड़ा हो गया है। परन्तु सभी नियम हर एक चीज पर लागू नहीं होते हैं कपड़े धोने के साधन या और सब स्थूल चीजों के लिए विज्ञान ने नित नये उपकरण दिये हैं। दुनिया की हर एक चीज पर विज्ञान का वर्चस्व कायम हो चुका है। हर एक चीज को साफ करने का या नवीनीकरण करने का भिन्न–भिन्न तरीका होता है किन्तु मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से सभी को आखिरकार साफ करने का उपाय ढूँढ़ ही लिया है। परन्तु

जिसको साफ करना अति आवश्यक है उसकी तरफ एक तो मनुष्य का ध्यान ही नहीं गया या जाता है, वह है **निज आत्मा**। अगर ध्यान गया भी तो साफ करने का उपाय उसे आता ही नहीं। विज्ञान का कोई भी साधन उसको साफ ही नहीं कर सकता। हाँ कुछ लोग ये समझते हैं कि इसे धोना अति आवश्यक है और धोते भी हैं पर हर चीज को एक ही तरीके से नहीं साफ किया जा सकता। जैसे कपड़ों को साफ करने के लिए पानी का उपयोग होता है। कुछ कपड़े वा लोहा, कैरोसीन व पेट्रोल से साफ होते है। किन्तु सोने को अग्नि ही साफ कर सकती है। स्थूल चीजों को स्थूल साधनो से साफ किया जा सकता है व साफ करते भी हैं परन्तु आत्मा रूपी सूक्ष्म सत्ता को साफ करने में पानी असमर्थ है उसका आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और ना ही कोई स्थूल और सूक्ष्म सत्ता उस पर कोई प्रभाव डाल सकती है परन्तु आज तक लोग **आत्मा** को भी स्थूल चीजों से साफ करने का यत्न करते आ रहे हैं किन्तु वह साफ तो हुई नहीं और ही मैली होती गयी।

पूरे 5000 वर्ष के समय चक्र में 84 पुनर्जन्म पूरे करते करते आत्मा जब पूर्ण रूप से गंदी हो जाती है जब वह मलिन एवं चमकविहीन हो जाती है तब सिर्फ **परमपिता परमात्मा शिव** ही उसको पुनः साफ सुन्दर एवं चमकदार बनाते हैं। **जब सभी मनुष्य आत्मायें, महात्माओं, धर्मात्माओं, ऋषियों–मुनियों के पास चक्कर लगाकर थक जाते हैं तब कलियुग अन्त में स्वयं परमपिता परमात्मा, पतित पावन ,गीता–ज्ञानदाता निराकार शिव आकर यह जिम्मेवारी लेते हैं। वे आत्मा को कैसे साफ करते हैं वो प्रक्रिया काफी ध्यान देने योग्य है।** सर्वप्रथम आत्मा को ज्ञान रूपी जल में, सेन्टर रूपी बर्तन में सात दिन पूरा भिगोकर रखते हैं जिसमें स्नेह का सर्फ, अटेन्शन रूपी मसाला डाल योग अग्नि की भट्ठी पर चढ़ाते है। ठीक तरह से गर्म होने पर उसे ड्रामा के पट्टे पर लक्ष्य सोप लगाकर प्रैक्टिस का सटका लगाते हैं फिर परीक्षाओं रूपी ब्रश से रगड़ते हैं। रगड़ने के उपरान्त मुरली रूपी साफ पानी में उसे खंगालते हैं और फिर व्यवहार व परमार्थ रूपी हाथों से निचोड़ते है। फिर पवित्रता रूपी टीनोपाल डालकर नई ब्राइटनेस का उजाला(नील) डालकर नई सफेदी लाते हैं। फिर धारणा व सेवा के हल्के हल्के हाथों से निचोड़ते हैं। उसके बाद नियम व मर्यादा के खम्भों से श्रीमत की मजबूत रस्सी बांधकर ज्ञान सूर्य की धूप में, उमंग उत्साह की हवा में सूखने के लिए संगठन के सहयोग की क्लिप लगाकर छोड़ देते हैं।

सूखने के बाद मनन–चिन्तन के पानी का स्प्रे कर सच्चाई की मेज पर ''Nothing New'' के आइरन से प्रेस कर उसे एकदम नया कर देते है। फिर लाइट के कवर में चार्ट के साथ पैक कर

ब्रह्मा बाबा सुपर राकेट के साथ भेजकर **परमधाम अविनाशी शो केश** में लगा देते हैं। फिर सतयुग नई दुनिया में नई चमक के साथ यूज करने के लिए भेजेगें। **जिसकी चमक 2500 वर्ष फीकी नहीं पड़ती** और सबसे बड़ी बात धुलाई का **कोई चार्ज नहीं लेते**। सिर्फ उसको धुलने के लिए देना माना आत्मा को उनके पास जाना होता है। हाँ वह धोते तो बहुत धीरे धीरे हैं पर ज्यादा मैले कपड़ों में **सटका तो लगाना ही पड़ता है।** तो हिम्मत और सहनशीलता को धीरज के साथ लेकर जाना होगा **बस धुलाई फ्री**। इस धुलाई की विशेषता यह है कि कपड़ा कितना ही गंदा व दाग धब्बों वाला क्यों न हो पर उसमें कोई भी दाग धब्बा नहीं रह जाता और ना ही 2500 वर्ष तक उसकी चमक जाती है और न कोई दाग धब्बों का उस पर असर होता है। **इसलिए ही परमात्मा को सर्व महान व सर्वश्रेष्ठ धोबी कहा गया है।** जैसे इस दुनिया के धोबियों को कितनी भी ठंड हो कितना भी गंदा पानी हो, कितने भी विषैले जीव जन्तु पानी में रहते हों पर उनको न कभी ठंड लगती है, न कोई इन्फैक्शन, न जीव जन्तु का भय। ठीक इसी प्रकार इस संसार सागर में कितना भी विकारों का प्रभाव हो,आत्माओं की ग्रहचारी व कालिमा हो, प्रकृति का प्रकोप हो **पर परमात्मा का कार्य निर्विघ्न चलता रहता है उन पर किसी का किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता। वह हमेशा यहाँ की हर परिस्थिति से साक्षी व उपराम ही रहते हैं, वह संसार में आते तो हैं पर संसार का लेपक्षेप उन पर जरा भी नहीं लगता है।**

ब्रह्माकुमारी सुमन बहन
अलीगंज,लखनऊ।